Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.B.17. Hindi Padm 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Gaṅgā-laharī.

Ganga Lahree

गङ्गा लहरी

گنگا لہری

जिसको

श्री मत्कविकुल चूड़ामणि पद्माकर जीने विद्वज्जनों के मनोरञ्जनार्थ गंगा माहात्म्य अरु तटस्थ जीव हंसादि धन्यता और स्नातक लोक प्राप्ति वर्णन पूर्व्वक अति रमणीय कवित्तों में रची है

वही

अति स्वच्छ वर्णों में लिखवाय और यथा विधि से शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवल किशोर के छापेखाने में छापी गई

अगस्त सन् १८८० ई०

श्रीगं॰ल॰ श्रीगणेशायनमः॥ अथ गंगा लहरी कवि पद्माकर कृत कवित्त लिख्यते॥

२ ॥दोहा॥ हरिहर विधि को सुमिरि के काटहु कठिन कलेश। कवि पद्माकर करत हैं गंगा लहरी वेश॥१॥ कवित्त॥ वई ती विरंचि भई वामन पगन पर फैली २ फिरी ईश शीश पै सुगथ की। आई कै जहाँन जन्तु जंघा लपटाई फिरि दीनन के हेत दौरि कीन्ही तीनि पथ की। कहै पद्माकर सुमहिमा कहाँ लौं कहौं गंगा नाम। पायो सो ही सबके अरथ की। चाख्यो फल फली फूली गहु गही वहु वही लहु लही कीरति लता है भगीरथ की॥२॥ कूरम पै कोल कोल हूँ पै शेष कुराडली है कुराडली पै फवी फैल सुफन हजार की। कहै पद्माकर त्यों फन पै फबी है भूमि भूमि पै फवी है स्थित रजत पहार की। रजत पहार पर शम्भु सुर नायक हैं शंभु पर जोति जटा जूट है अपार की। शम्भु जटा जूटन पै चन्द की छुटी है छटा चन्द की छटा न पै छटा है गंगा धार की॥३॥ करम को मूल तन तन मूल जीव जग जीवन को मूल

गंगा लहरी

(अति)

श्रीगं.ल.

३

अति आनंद ही धरिवो। कहै पदमाकर त्यों आनंद को मूल राज राज मूल केवल। प्रजा को भोन भरिवो। प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ मेघन को मूल एक यज्ञ अनुसरिवो। यज्ञन को मूल धन धन मूल धर्म्म अरु धर्म्म मूल गंगा जल विन्दु पान करिवो ॥४॥ सहज सुभाव आय एक महा पातकी की गंगा भैया धोई तू तो देह निज आपहै। कहै पदमाकर सु महिमा मही में भई महादेव देवन में बाढ़ी थिर थापहै। जकिसे रहे हैं यम थकिसे रहे हैं दूत दूती सब पापन के उदी तन ताप है। बांची वही वाकी गति देखिवे के बिचित्र रहे चित्र कैसे लिखे चित्रगुप्त चुप चापहै ॥५॥ गंगा के चरित्र लखि भाख्यो यमराज यह एरे चित्रगुप्त मेरे हुकुम में कान दे। कहै पदमाकर नरक सब मूंदिकर मूंदि दरवाजेन को तजि यह थान दे। देखु यह देव नदी कीन्हे सब देव याते दूतन बुलाइके विदा के वेगि पान दे। फारि डारु फरद न राखु रोजनामा कहूं खाता खत जानदे वही को बहि जानदे ॥६॥ जान्यो जिनहैन

जग योग जप जागरन जन्महि बितायो जग जोयन को जोइकै। कहै पदमाकर
सुदेवन के सेवन ते दूरि रहे पूरि मति वेद रद होइकै। कुटिल कुराही कूर कलही क-
लंकी कलिकाल की कथान में रहे जे मति खोइकै। तेऊ विषाणु अंगन में बैठे सुर
संगन में गंगा की तरंगन में अंगन को धोइकै ॥ ७ ॥ जैसे तैन मोको कहूं ने कहूं
डरात हुतो ऐसे अब तो सो होहुं ने कहूं न डरि हौं। कहै पदमाकर प्रचंड जो परैगो
तो उमरिड करि तो सों भुजदण्ड ठोकि लरि हौं। चलो चलु चलो चलु बिचलु न
बीचहीं ते कीच बीच नीच तो कुटुम्ब को कचरि हौं। एरे दगादार मेरे पातक अपार
तोहिं गंगा की कछार मो पछारि छार करि हौं ॥ ८ ॥ आयो जौन तेरी धौरी धारा
में धसत जात तिनको न होत सुर पुर ते निपात है। कहै पदमाकर तिहारो नाम जाके
मुख ताके मुख अमृत को पुञ्ज सर सात है। तेरो तोय छूके औ छुवत तन जाको वा-
त तिनकी चलन यमलोकन में वात है। जहां जहां भैया तेरी धूरि उड़ि जाती गंगा तहां

तहां पापन की धूरि उड़ि जात है ॥ ९ ॥ यमपुर द्वारे लगे तिनमें केवारे कोऊ हैं नरख वारे रेसे वन के उजारे हैं। कहै पद्माकर तिहारे प्रन भारे तेउ कारि अघ भारे सुरलोक को सिधारे हैं। सुजन सुखारे करे पुराय उजियारे अति पतित कतारे भव सिन्धु ते उतारे हैं। काहू ने न तारे तिन्हे गंगा तुम तारे और जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं ॥ १० ॥ सुचित गोविन्द ह्वै के सेवते कहां धौं जाइ जल जन्तु पंति जरि जैबे को अभिलती। कहै पद्माकर सुजादा कहौं कौन अब जाती मरजादा है मही की अन मिलती। जल थल अन्तरिक्ष पावते क्यों पापी मुक्ति मुनिजन जापकन जोन दुरि मिलती। सूखि जातो सिन्धु बड़वानल की झारन सों जोन गंगा धार है हजार धार मिलती ॥ ॥ ११ ॥ बिधि के कमण्डल की सिद्धि है प्रसिद्धि यही हरि पद पंकज प्रताप की लहर है। कहै पद्माकर गिरीश ईश मण्डल के मुण्डन की माल तत्काल अघ हर है। भूपति भगीरथ के रथ की सुपुराय पथ जह्नु जप योग फल फैल की फहर

गंगालहरी

है। सेमकी छहर गंगा गावरी लहर कालिकाल को कहर यम जाल को जहर है १२
हौं तो पञ्चभूत तजिबे को तक्यो तोहि परते तो कह्यो मोहि भलो भूतन को प-
तिहै। कहै पदमाकर सुरक तन तारिबे में कीन्हे तन रयारह कहौ सो कौनि गति
है। मेरे भाग गंगा यही लिखी भगीरथी गंगे तुम्हें काहिए कछुक तो कितेक मेरी
मतिहै। एक भवशूल आयों मेटिबे को तेरे कूल तोहि तो त्रिशूल देत बारन लगा-
ति है ॥ १३ ॥ भाषा होत भूषित सुपूरी अभिलाषा होत सुयश लतानि की सुसा-
खा है सुगति की। कहै पदमाकर त्यों बदन बिशाल होत हाल होत हेरी छल छि-
द्रन की खति की। गंगाजू तिहारे गुण गान करे अज गवे आन होत बरषा सुआ-
नन्द की अति की। पुर होत पुन्यन को भूरि होत अधरम चूर होत चिन्ता दूर होत
दुरमति की ॥ १४ ॥ सूधरो जो हो तो मांगिलेतो और दूजो कहूं जातो बन खेती
कर खातो एक हरकी। एतो पदमाकर न मानत है नाथ चलें भुजन के साथ है।

(तोटक)

गिरैया अजगर की। मैं तो याहि छोड़ों पैन मोको यह छोड़त है फेरि लेरी फेरि
व्याधि आपने बगर की। गैल पै चढ़त गहि उरध की गैल गंगा कैसो बैल दीन्हो
जोन गैल गहै घर की॥ १५॥ योग जप जागो छाडु जाहुन परागो भैया मेरी कही
आंखिन के आगो सुतो आवैगी। कहै पदमाकर नगेहै काम सरस्वती सांच हूं
कालिन्दी कान कर नन पावैगी। लेहै छीनि अम्बर दिगम्बर के जोगावरी बैल पै
चढ़ाइ फेरि गैल पै चढ़ावैगी। मुराडन के माल की भुजंगन के जाल की सुगंगा
गज खाल की खिलत पहिरावैगी॥ १६॥ लोचन असम अंग भसम चिता की
लाइ तीनों लोक नायक सों कैसे के ठहरतो। कहै पदमाकर विलोकि डमिढंग
जाके वेदहूं पुराणा गान कैसे अनुसरतो। बाँधे जटा जूट वेढि परवत कूट माहिं
महाकाल कूट कहो कैसे के ठहरतो। पीवै नित भंगो रहै प्रेतन के संगो रहै
तो को नंगो जो नगांगो शीश धरतो॥ १७॥ पापन की पांति भांति भांति बिललात

परी यमकी जमाति हिलि कम्पन हिलति है। कहै पदमाकर हमेशादि विवी-
थिनि मो बानन कीरेल ठेल ठेलनि ठिलति है। सुर धुनि रावरे उधारे जगजीवन
की छिन छिन सैन शिवलोक को मिलति है। आसन अरघ देत देत निशि।
बासर विचारे पाक सासन को सांसन मिलति है॥ १८॥ सवन के बीच बीच।
समय महा नीच सुख गंगा मैया तेरे आजु रेनुकन ह्वै गए। कहै पदमाकर हमायों
सुनो ताकी बाकी छवि की छटान छित छोरजोर छ्वै गए। दूत दवकाने चित्र-
गुप्त चुप काने औ जकाने यम जाल पाप पुञ्ज लुञ्ज ह्वै गए। चारि मुख चारि
भुज चाहि चाहि रहे ताहि पञ्चन के देखत हीं पञ्च मुख ह्वै गए॥ १९॥ कलि
के कलंकी क्रूर कुटिल कुराही केते तरिगे तुरन्त तेवे लीन्ही रेणु राह जब। कहै
पदमाकर प्रयास बिन पावे सिद्धि मानत न कोउ यमदूतन की दाह दब। कागद
करम करतूति के उदाइ धरे पचि पचि पेच में परे हैं प्रेतनाह अब। वे परदवेदरद

(भाति)

गजब गुनाहिन के गंगा की गारद कीन्हे गारद गुनाह सब ॥ २० ॥ रेणुका कीरा-
सन में कीच कुश काशन में निकट निवासन में आसन लदाऊ के । कहै पदमा-
कर तहाँई मज्जु मूरन में धौरी धौरी धूरन में पूरन प्रभाऊ के । बारन में पारन में ।
देखहु दरारन में नाचतिहै सुकृति अधीन सब काऊ के । कूल औ कछारन में ।
गंगा जल धारन में संझरा सँझारन में झारन में झाऊ के ॥ २१ ॥ तेरे तीर जौ-
लौं एक लहर निहारियतु तौ लौं कैयो लक्ष सूक्ष लहर न धारती । कहै पदमा-
कर चहौ जो वरदान तौ लौं कैयो बरदानन के गान अनुसारती । जौ लौं लगो
काहू सों कहन कला एक तौ लौं कैयो कला के समूहन समहारती । जौ लौं ए-
क तारे को हौं रचत कविन गंगे तौ लौं तुम कोतिक करोरि तारि डारती ॥ २२ ॥
गंगा जू तिहारे तीर आछी भाँति पदमाकर देखि एक पातकी की अद्भुत गति
है । आइ के गोविन्द बाँह धरि के गरुड़ जू पै आपनेई लोक जाइबे की कीन्ही ।

मतिहै। जौलौं चलिबे को भए गाफिल गोविन्द तौलौं चोरि चतुरानन चलाई हंसगति है। जौलौं चतुरानन चितैबे चारो वोर तौलौं वृष पै चढ़ाइ लै गयोई वृषपतिहै ॥ २३ ॥ पापी एक जात हुतो गंगा के अन्हायबे को तासों कहै कोऊ एक अधम अपान में। जाहु जनि पन्थी उत बिपति विशेषि होत मिलेगो महान कालकूट खान पान में। कहै पद्माकर भुजंगान बंधैगो अंग संग में सुभारी भूत चलैगो मसान में। कमर कसैगो गज खाल ततकाल बिन अम्बर फिरैगो तूं दिगंबर दिशान में ॥ २४ ॥ कैधौं तिहूं लोक की सिंगार की विशाल माल कैधौं जगीजगा में जमाति तीरथन की। कहै पद्माकर विराजे सुर सिन्धु धार कैधौं दूध धार कामधेनुन के थन की। भूपति भगीरथ के यश की जलूस कैधौं प्रगटी तपस्या कैधौं पूरी जन्हुजनकी। कैधौं कछू राखे राकापति सों इलाका भारी भूमि की सलाका के पताका पुराय गनकी ॥ २५ ॥ यम को न जोर जब पापिन पै चल्यो तब

हाथ जोरि गंगाजू सों बुगुली करै खरे। बड़ेन पै डरो पैना डरो देवि तुच्छन पै कहै पदमाकर सुनावत हरे हरे। बड़ेन पै डरै बड़ी पाइये बड़ाइ देखो ईश पै दरी तो तुम्हे ईश शीश पै धरे। तुच्छन को देती जैसो नारायण रूप तैसो तुच्छ तुम्हे तुच्छ करि पायन तरे करे॥ २६॥ अधम अयान एक चढ़िकै विमान भाख्यो बूझत। हौं गंगा तोहिं परि परि पाय हौं। कहै पदमाकर कृपाल ह्वै बतावो सांची देखो। अति अद्भुत रावरे सुभाय हौं। तेरे गुन गानही की महिमा महान मैया कान। कान नाइकै जहान यश छाय हौं। एक सुख गाये ताते पञ्च सुख पाये अब। पञ्च सुख गाइ हौं तो कैते सुख पाइ हौं॥ २७॥ पायन की पांति महा मंद सुख मैली भई दीपति दुचन्द फैली धरम समाज की। कहै पदमाकर त्यों रोगन की राह परी दाह परी दुखन में गाह अति गाज की। जाहिन ते भूमि में भगीरथ ने। आनी जग जानी गंगा धारा या अपारा सब काज की। ताहिन ते जानी सी बि-

लाइब्रेरी

कानी बिललानी सी बिलानी सी दिखानी राजधानी यमराज की ॥ २७ ॥ यम के
जसूस बिनती यम सों हमेशा करें तेरी दाकुरी को ठीक नेकुन निहारो है। बड़े बड़े
पापी औ सुरापी दुज तापी तहाँ चलनन पावे कहूं हुकुम हमारो है। कहे पद्मा-
कर सुब्रह्म लोक बिष्णु लोक नाम लैके कोऊ शिवलोक को सिधारो है। बैठी
शीश गंगा के तरंगा है अभंगा ऐसी गंगा ने उदाय दीन्हो अमल तिहारो है। २९।
बिन जप यज्ञ दान तीरथ तपस्या ध्यान चाहत हो जो पै तिहूं लोक में महा उदो-
त। कहे पद्माकर सुनो तो हाल हामी भरो लीखो कहे लैके कहूं कागद कलम
दोत। गंगाजू के नाम सुने हामी भरे लिखो कहे ऐसे चढ़ि जात कछू पुण्यन के
पूरे गोत। सौ गुने सुनेते औ हजार गुने हामी भरे लाख गुने लिखत करोरि गुने
कहे होत ॥ ३० ॥ परो एक पतित पराउ तीरी गंगाजू के कुटिल हतघ्नी कोढ़ी
कुरिहत कुढंगी अन्ध। कहे पद्माकर कहो मैं कौन बाकी दशा कीट परिगासतन

आवै महा दुरगन्ध। पाप हाल छूटिगो सु लूटिगो विपति जाल टूटिगो तड़ाक दे सु नाम लेत भव बन्ध। गं कहै गणेश बेश दौरि गही बांह अरु गाके कहे गरुड़ चढ़ाइ लीन्हो निज कन्ध॥ ३१॥ शारद घटासी खासी उदती अटासी दुपटा सी छित छीरधछटासी निर धारिए। लज्जासी छुटीसी छार हारी सी गढ़ीसी गढ़ मढ सी मढीसी औ गढ़ीसे के द्वार द्वारिए। कहै पद्माकर सुधौंरी धौंरी दौरी आवै चौरी चौरी चञ्चल सुचारु चिन्ह वारिए। हरे हरे छबिली नईनई न्यारी न्यारी नित लहरै निहारी प्यारी गंगाजू निहारिए॥ ३२॥ विघन बिनाशै भव पास होत नाशै भासै नाशै पुराय पुञ्ज की। प्रकाशै रंग रंगा के। सुख की समाजै उपराजै साज छाजै छित घन से गराजैं राजैं शीश ईश नंगा के। कहै पद्माकर सुजाने करि ज्ञानैं जानैं तानैं मन मानैं भोग आनैं देव अंगा के। सुन्दर सुभंगा नित अमित अभंगा आछे अघ ओघ भंगा स तरंगा देवि गंगा के॥ ३३॥ तहाँ आई भूमि ते लगाई आस मानहू लौं जान गीरवान औ बिमानन

के जुरे थोक। कहै पदमाकर जो कोउ नर जैसे तैसे तन देत गंगा तीर तजि के महान
शोक। सो तौ देत व्याधय बिथ दुखन दिनाई देत पापन के पुञ्ज को पहारन को
ढोक ढोक। दगा देत दूतन चुनौती चित्रगुप्त देत यम को जरब देत पापी लेत शि-
वलोक॥ ३४॥ सुखद सुहाई मन भाई मुनि देवन के निखिल निकाई रूप वेदन
में गाई है। कहै पदमाकर कहाँ लौं साधुताई कहौं सबहीं पै एक सी दया सी
बराराई है। पुन्य भाई धारत उधारत अधम ताई नीक ढकुराई कीटसक ढहराई
है। जहाँ जहाँ यमकी जमाति कीन करामाति तहाँ तहाँ फिरै देवि गंगाकी दुहाई
है॥ ३५॥ गंगा जू के नीर तीर छोड़े हैं शरीर जिन ते उगने जात पुराय वन्तन की धुर
हैं। कहै पदमाकर त्यों तिनकी जलूसे लखि गीरवान सकल सराहैं जुर जुर हैं।
सारथी गोविन्द दीप दान वारे भानु होत पंखवा वारे भारे पाक सासन से सुर हैं। खौर
वारे वरुनत मोर वारे तारा पति चौर वारे चारु चतुरानन चतुर हैं॥ ३६॥ एक महा

पात की सुगात की दशा विलोकि हेत यों उराहनो सु आठ हूँ पहर है। मीच समय तेरे उत आप गए कराठ इत व्यापि गयो कराठ काल कूट सों जहर है। आप चढ़ी शीश सोहि दीन्ही बकसीस औ हजार शीश वारे की लगाई अटहर है। मोहि कीरि नंगा अंग अंगन भुजंगा बांधो री मेरी गंगा तेरी अद्भुत लहर है॥ ३७॥ कीजतु फिराद सुनि लीजिए हमारी गंगा शारवन के साथी दुःख हिराज डिगाए तू। कहे पदमाकर जु जानत न कोउ दूजो तीन यश्रु जगा जगा जगा हुम गाए तू। आयो हुतो हौं तो कछु लीवे को तिहारे पास जनम के जोरे मेरे पातक हिराये तू। छोड़ि छोड़ि तत तन सो एते गरीब जेवे तेवे पूरे पूरे पुन्य पटल जगाए तू॥ ३८॥ सुनि मनमाने सनमाने शारदादि वन्दि नारदादि जाने जे बखाने वेद बानी के। आप अविनाशी है विनाशी दुःख जालन के पुराय के प्रकाशी प्रन पूरक सु प्रानी के। कहे पदमाकर सुपाप तम भूषन है दूषन रहित भव भूषन महानी के। ध्यावो

१६ अब ध्यावो लोक पावो देव देवन के गावो अरे गावो गुण गंगा महारानी के
लाइ भूमि लोक मैं जसूस जब रई जाइ जाहिर खबर करी पापिन के मित्र की।
कहै पद्माकर बिलोकि यम कही के बिचारो तो करम गति ऐसे अपबित्र की॥
जौं लौं लगो कागद विचारन कछुक तौं लौं ताके कान परी धुनि गंगा के चरित्र
की। वाके शीशही ते ऐसी गंगधार वही जामे बही बही फिरी वही चित्र औ॰
१५ गुपित्र की॥ ४०॥ सुर सरि मैया एक पातकी पुकार्यो तोहि ऐसी दिव्य दीन्हो
तप तेज वोहि तैने है। कहै पद्माकर स्व लोक तिहि आगे रवि करत प्रणाम
सुर वृन्द सब नैने है। व्याकुल विलोकि वह बोल्यो देवि देवन सों कोऊ ना डरा-
हूं तुमे और कछु दैने है। इन्द्र सों कहत मोहिं लेनो है न इन्द्र लोक शम्भु लोक॰
लैने के गोविन्द लोक लैने है॥ ४१॥ हेरि हेरि हंसतन चाहत हरषि चढ़्यो॰
बैलहूं बिलोकि मन वाकी ओर टरको। कहै पद्माकर सुदेखि के गरुड़हूं को

लेखि निज भाग अनुराग के न सर को। कापै चढ़ौं कौन तजौं चाहत सबन यह
शोचत पतित पर्यो गंगा तीर पर को। जौंलौं घरी हैक रूप हर को न पायौ तौलौं
पातकी बिचारो भयो चोर भरे घर को॥ ४२॥ वाको यश कितहूं न जाग्यो पर त-
च्छु पई याको धाम धाम फैलि फैलि रह्यो यश है। वाको सुन्यो एक देवलोक
में दरश होत याको तो दिखात तिहूं लोक में दरश है। कहै पदमाकर सुदान वह
मांगे देत एतो बिन मांगे सबै देत सर बस है। आछो अभिराम कहै पूरन सकल
काम गंगा जू को नाम काम तरु ते सरस है॥ ४३॥ सार माला सत्य की बिचार मा-
ला वेदन की भारी भाग माला है भगीरथ नरेश की। तप माला जन्हु की सुजप
माला योगिन की आछी आप माला या अनादि ब्रह्म बेश की। कहै पदमाकर
प्रसान माला पुन्यन की गंगा जू की धारा धन माला है धनेश की। ज्ञान माला
गुरु की गुमान माला ज्ञानिन की ध्यान माला ध्रुव की मौलिमाला है महेश की ४४

गंगालहरी

ज्ञानन में ध्यानन में निगम निदानन में मिलत न क्यों हूं हरिही में ध्याय यतु है। कहै पदमाकर न तच्छन प्रतच्छ होत अच्छन के आगे हूं अधिच्छ गाय यतु है। इंदिरा के मन्दिर में सुनिये अनन्द भरे बीधे भव फन्द तहाँ कैसे जाय यतु है। देवन के वृन्द में न पैये छीर सिन्धु में सुरगंगा जल बिन्दु में गुविन्द पाय यतु है ॥ ४५॥ नीर के निकट रेनु रञ्जित लसैयो तट इक पट चादर की चांदनी बिछाई सी। कहै पदमाकर त्यों करत कलोल लोल आवरत पूरे रामसराडल की पाई सी। बिशद बिहंगन की बानी राग राचती सी नाचती तरंग रंग आनंद बधाई सी। अघ की अंधेरी कहूं रहन न पाई फिरै धाई धाई गंगा धारा सरद जुन्हाई सी ॥ ४६॥ काम अरु क्रोध लोभ मोह मद मात सज्जे इनकी जंजीरन को जारि हैं पै जारि है। कहै पदमाकर पसारि पुराय चास्यो बोर चास्यो फल धामन में धारि हैं पै धारि है। क्षोभछल छन्दन को बाढ़े पाप वृन्दन को फिकिर के फन्दन को फारि हैं पै फारि है। एकै बार

गंगालहरी

(बारि)

बारि जिन गंगा को पियो है तिन्हें तारनि तरंगिनी या तारि है पै तारि है ॥ ४७ ॥ सुं
डन की माल देखो भाल पर ज्वाल की वो छीन लीवो अम्बर अडम्बर जहां जैसो ।
कहै पद्माकर त्यों बैल पै चढ़ाइ वो उढ़ाइ वो पुरानी गज खाल को भलो तैसो । नंगा
करि डारि वो सुभंगा भय डारि वो सुगंगा दुख मानिबो न बूझे ते कछू वैसो । साँपनि
सिंगारि वो गरे में बिष पारि वो सुतारि वो जो ऐसो तौ बिगारि वो कहो कैसो ॥ ४८ ॥
सूखे भये जेहैं नर गंगा के अन्हाइबे को कामी बदनामी झामी कै यक करारहैं । कहै
पद्माकर त्यों तिनकी अवाइन के माचि रहे जोर सुर लोकन में शोर है । बारबारहा
ट सी लगाये लरवैं घाट घाट बाट हैरे तीर में कबैधौं तनवोर है । एक वोर गरुड़ सुहंस
एक वोर ढाढ़े एक वोर नाहिया बिमान एक वोर है ॥ ४९ ॥ आशा करि आयो हु
तो मैया पास सवरे में गाढ़ हू के पास दुख दुरि बुटि बुटिगो । कहै पद्माकर कुरोगमें
संघाती तेऊ गैल में चलत घूमि घूमि घुटि घुटिगो । दगाहार दोष दीह दरिद्र बिलाय

गारा फिकिर के फन्द बिन छोरे छुटि छुटिगो। जौलौं आउ आउ तेरे तीर पर गंगा तौ-
लौं बिचही में मेरे पाप पुंज लुटि लुटिगो ॥ ५० ॥ भूमिलोक भुवलोक स्वर्गलोक ।
महा लोक जनलोक तपलोक सत्यलोक कल में। कहै पद्माकर अतल में बितलमें
सुतल में रसातल में मञ्जु महातल में। त्योंही तलातल में पताल में अचल चलजेते
जीवजन्तु बसे भावत सकल में। बीचमेन बिल मे बिराजे बियाणु थल में सुरगंगा जू के
२० जल में अन्हाये एक पल में॥ ५१ ॥ जन्म जन्म जिन छोड़्यो तो न मेरो संग अंग अंग।
नितही रहे जे लपटाने हैं। कहै पद्माकर तिहारी सोंह राङ्ग योगा जपके जतन
में न नेकु अकुलाने हैं। तौन पाप मेरे तेरे तीर पर मैया अब मिलतन हेरे इतकि-
त धौं हिराने हैं। कचरे करार में वहे के बीच धार में के बूड़ेवे मेवार में किवारू में
बिलाने हैं ॥ ५२ ॥ योगाहू में भोगा में बियोगा में संयोगा हू में रोगाहू में रस में नने-
को बिसराइये। कहै पद्माकर पुरी में पुन्य सौरव में फैलन में फैल २ गैलन में गाइये।

वैरिन में बन्धु में विद्या में बंश बालन में बिये में रनहूं में जहां २ जाइये। सोचहूं में सुख में सुरी में साहिबी में कहूं गंगा गंगा गंगा काहि जनम बिताइये ॥ ५३॥ दोहा॥ गिरिश गजानन गिरि सुता ध्याय समुझि श्रुति पन्थ। कवि पदमाकर ही कियो गंगालहरी ग्रन्थ॥ ५४॥ कवित्त॥ भारी सो भुजंग भागीरथि के सुतीर पर्यो ताहि लखि खाइबे को तरछत पारभो। कहै पदमाकर चतुर्भुज को रूप भयो बड़े २ पापनि हूं ताप को निसार भो। नारद बिशारद हूं शारद सराहैं भलैं इन्द्र यम बरुण कुबेर २ परिवार भो। गंगा के प्रभाव लखि मुकुत मज्जा की मञ्जु सोई अहि गरुड़ के कन्ध पै सवार भो॥ ५५॥ दो०॥ गंगा लहरी जो सुजन। कहैं सुनै श्रुति सार॥ ताको गंगा देति हैं। सदा सुभग फल चार॥ इति पदमाकर कृता गंगालहरी समाप्ता

इति